वार्षिक 200/- रुपये फरवरी 2026 वर्ष 28 अंक 04 पृष्ठ - 28 मूल्य 20/-रु.

गोसम्पदा

गौ-संरक्षण अर्थात स्वराज्य

- श्री गुरुजी

सम्पादकीय

पूज्य गोलवलकरजी की जयंती (19 फरवरी) पर विशेष

गौ-संरक्षण अर्थात स्वराज्य

- श्री गुरुजी

नैसर्गिक सत्य यह है कि सम्पूर्ण ब्रह्मांड (दृश्य–अदृश्य) के सातों लोकों–अतल, वितल, पाताल, रसातल, भूलोक, देवलोक एवं गोलोक (बैकुंठधाम) में **"गाय"** जैसा दिव्य–सात्विक और मानव हितैषी–कल्याणकारी प्राणी है ही नहीं। इसी कारण से सातों लोकों में गोलोक को सर्वश्रेष्ठ–सर्वोच्च स्थान प्राप्त है, जो सर्वविदित है और समीचीन भी। इससे स्पष्ट है कि "गोलोक" का यह माहात्म्य गोमाता–गोवंश के आधार पर ही है। स्मरण रहे मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम का जन्म रघुवंश कुल में हुआ था, जिसका प्रादुर्भाव गोमाता की कृपा से ही हुआ था। योगेश्वर श्रीकृष्ण भगवान को गोपाल–गोविंद के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि वे सर्वश्रेष्ठ गोपालक–गोरक्षक थे। इस अलौकिक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और सत्य की अनुभूति के आधार पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक पूज्य गुरुजी (गोलवलकरजी) ने गोमाता–गोवंश की रक्षा के लिए प्राणपण से प्रयास किया। गोरक्षा के संदर्भ में केन्द्र सरकार द्वारा बनाई गई एक समिति में श्रीगुरुजी सदस्य भी रहे। उल्लेखनीय है कि आजादी के पूर्व से ही गोरक्षा हेतु अनेक संघर्ष–प्रयत्न किये गये। 1857 की क्रांति की जन्मदात्री गोमाता ही थीं। स्वाधीन भारत में भी गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने के लिए अनेक बार जन आंदोलन, संघर्ष, धरने, अनशन किये गये और अनेक साधु–संतों–महात्माओं एवं गोभक्तों ने अपने प्राणों की आहुति भी दी। गुरुजी ने उस समय के पूज्य शंकराचार्यगण, पूज्यपाद प्रभुदत्त ब्रह्मचारीजी, श्री विनोबाजी सहित अनेक विचारकों एवं श्रद्धेय महानुभावों से गोरक्षा के संदर्भ में व्यापक स्तर पर वार्तालाप और पत्र व्यवहार किया था।

श्री गुरुजी के मार्गदर्शन में सन 1952 में संघ प्रतिनिधि सभा में गोरक्षा के संबंध में एक विशेष प्रस्ताव पास हुआ था। तत्पश्चात गुरुजी के नेतृत्व में 7 दिसंबर, 1952 को पौने दो करोड़ हस्ताक्षरों का एक निवेदन (ज्ञापन) तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी को सौंपा गया था। पूज्य गुरुजी ने कहा था कि "गोमाता हमारी श्रद्धा का सर्वमान्य केन्द्र हैं। इसलिए गोवंश–संरक्षण व संवर्द्धन हेतु समाज के सभी वर्गों को प्रयत्न करने चाहिए।" हस्ताक्षर अभियान के संदर्भ में गुरुजी का कहना था कि "हमने यह **हस्ताक्षर आंदोलन** राजनीतिक दॉव–पेंच सोचकर हाथ में नहीं लिया है। आंतरिक प्रेरणा से यह कार्य करने के लिए उद्यत हुए हैं, आचार्य विनोबा भावे कहते हैं, **'सबै भूमि गोपाल की'**। इसलिए मैं यह जानना चाहता हूं कि यह भूमि गोपालकों की है या गौ–हत्यारों की? हमारा यह कार्य नया नहीं है। महर्षि दयानंदजी ने भी यह कार्य अपने हाथ में लिया था। क्या उन्होंने भी राजनीतिक दॉव–पेंच की दृष्टि से यह कार्य किया था? मुझे इस संबंध में लोकमान्य तिलक के जीवन का एक प्रसंग याद आता है। वे एक बार नागपुर आए थे। नागपुर तो गौ–रक्षण सभा का जन्मस्थान है। तिलकजी के यहां आने पर गौ–रक्षण सभा के संचालक उनके पास गए और गो–रक्षण सभा के लिए उनकी सहायता मांगी। लोकमान्य जी ने उत्तर दिया – **'शिवाजी महाराज ने गौ–रक्षण के लिए कोई गौ–रक्षण संस्था स्थापित नहीं की थी।** वैसे देखा जाए तो लोकमान्य जी ने जीवन पर्यंत इस कार्य में सहयोग दिया था, परंतु गौ–रक्षण सभा के कार्यकर्ताओं को ऐसा उत्तर देने के पीछे उनका अभिप्राय था कि जब तक गौ–भक्षकों का शासन नष्ट नहीं होता तब तक गोमाता की रक्षा करना कैसे संभव है? **गौ–भक्षक शासकों को सम्पूर्ण रूप से निर्मूल या विनाश करने वाले महाराज शिवाजी को इसी कारण से गौ–प्रतिपालक** कहा जाता है। इसी परिप्रेक्ष्य में **गौ–संरक्षण अर्थात स्वराज्य** यह सदा से हमारी धारणा बनी हुई है।"

गुरु जी ने कहा था कि "जिसके रोम–रोम से अपने राष्ट्र की एकता ही प्रस्फुटित होती है, यदि उसका संरक्षण नहीं हुआ तो इस देश का उत्थान कैसे होगा? कभी–कभी मुझे ऐसा लगता है कि जहाँ मातृभूमि के टुकड़े हो गए, वहाँ गोमाता के टुकड़े होते हैं तो उसमें आश्चर्य क्या? कहीं ऐसा ही सोचकर हम गोमाता की उपेक्षा तो नहीं कर रहे हैं? वस्तुतः **गोमाता एवं भू–माता ये हमारे राष्ट्र जीवन के आधार स्तंभ हैं।** गाय की हत्या से अधिक बड़ा पाप, दूसरा कोई हो ही नहीं सकता। इसी दृष्टि से यह कार्य हमने अपने हाथ में लिया है।"

अब वर्तमान में देश में गौ–भक्षकों की सरकार न होकर गोरक्षकों–गोभक्तों की सरकार है। इसीलिए गोमाता–गोवंश के अविस्मरणीय योगदान को ध्यान में रखकर त्वरित गोवंश–हत्या सम्पूर्ण देश में रोकने के लिए कानून बनाना अपरिहार्य है, जो सभी गोभक्तों की स्वाभाविक अपेक्षा भी है। अतः केन्द्र सरकार से सभी राष्ट्रभक्तों–गोभक्तों की मांग है कि वह भारत के ललाट पर लगा यह काला कलंक मिटाने के लिये तत्काल कार्यवाही करे।

(सम्पादक)

गोसम्पदा

वर्ष - 28 अंक-04 फरवरी - 2026 पृष्ठ - 28

संरक्षक :
हुकुमचंद सावला जी

दिनेश उपाध्याय जी
अखिल भारतीय गोरक्षा प्रमुख
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22
मो. : 9644642644
ईमेल : gosampada@gmail.com

सम्पादक : देवेन्द्र नायक
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22
मो. : 8130049868
ईमेल : gosampada@gmail.com

परामर्शदाता : प्रो. गुरुप्रसाद सिंह जी
मो. : 9838900596

प्रकाशक : राजेन्द्र प्रसाद सिंहल जी
मो. : 9810055638

प्रचार-प्रसार प्रमुख : डॉ. नरेश शर्मा जी
9811111602

व्यवस्थापक : रामानन्द यादव
मो. : 9958710672

साज-सज्जा : सुमन कुमार

वैधानिक सूचना
'गोसम्पदा' से संबन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 माह के अंदर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में मान्य होंगे

सहयोग राशि
एक प्रति : रु. 20/-
वार्षिक : रु. 200/-
आजीवन : रु. 2000/-

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
पंचगव्य और पर्यावरण-महाशिवरात्रि	04
फिल्म 'गोदान' और उपन्यास 'गोदान'	06
अतिघातक है गोवंश की उपेक्षा-तिरस्कार	08
गाय ही देवों की और देवत्व की आश्रयदाता है	11
गाय बचेगी-देश बचेगा	13
भारतीय गाय एक अमूल्य निधि	14
गाय के गोमूत्र की उपयोगिता	17
धैर्य की शक्ति	19
आत्मनिर्भरता का मंत्र है गोवंश आधारित कृषि	20
Mattu Pongal : A Tribute to Tamil Nadu's Cattle	22
Gomata - Living Embodiment of Harmony	24

वैद्य नंदिनी भोजराज (एम.डी., आयुर्वेद)

पंचगव्य और पर्यावरण-महाशिवरात्रि

भारतीय संस्कृति में पर्यावरण के सभी अंगों को अनन्य साधारण महत्व दिया गया है। पेड़–पौधे, पशु, पक्षी, प्राणी, जलचर जीव इन सबका आदर करने के लिए भी बताया गया है। आदिवासी क्षेत्र में प्रत्येक परिवार के देवता अलग– अलग प्राणी भी होते हैं। उनके परिवार में उस विशिष्ठ प्राणी की पूजा–अर्चना की जाती है। भारतीय संस्कृति में मनुष्य स्वास्थ्य एवम् पर्यावरण की सुरक्षा का विशेष विचार किया गया है। इस आधार पर कौनसी वस्तु का उपयोग कब कितनी मात्रा में किस पद्धति से करना है, यह भी वर्णन वेदों में पाया जाता है। **अथर्ववेद का उपवेद है ''आयुर्वेद''** जिससे मनुष्य की स्वस्थ आयु हेतु विस्तृत मार्गदर्शन हमें यहाँ प्राप्त होता है।

आयुर्वेद ने सृष्टि के विभिन्न अंगों का उपयोग स्वास्थ्य एवम् चिकित्सा के लिए किस तरह से किया जाए, यह जानकारी दी है। हिंदू धर्म एक आचार पद्धति है। जिसमें सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति तथा लय का भी ज्ञान वर्णित है। किसी भी सजीव प्राणी की उत्पत्ति के बाद अपने जीवन को चलाने के लिए उन्हें शुद्ध प्राणवायु एवम् जल की प्राथमिक आवश्यकता होती है। साथ ही विषमुक्त अन्न के बिना वर्तमान स्थिति में बीमारियों तथा बीमारों की संख्या में अत्यंत वृद्धि प्रतिदिन होते हम सब देख रहे हैं। हरकोई बीमारी से दूर रहना पसंद करता है। उसके लिए आवश्यक नियमों का पालन भी एक भाग है। आयुर्वेद में स्वास्थ्य रक्षा हेतु दिनचर्या, सुबह से रात्रि तक किस पद्धति से मुखमार्जन, स्नानादि के नियम, भोजन, निद्रा के नियम वर्णित हैं। ऋतुचर्या में कौन–सी ऋतु में क्या खाएं, कैसे रहें आदि का वर्णन बताया गया हैं। आने वाला मास **फागुन** है। उस समय वसंत ऋतु होती है। वसंत ऋतु में सामान्यतः शरीर में कफ का आधिक्य होकर, कफ प्राधान्य की व्याधि होने की संभावना बढ़ती है। जिन व्यक्तियों में कफ बढ़ने से तकलीफ होती है उन्हें विशेषरूप से सावधान रहने की आवश्यकता है। हमारे शरीर में कफ का प्रमाण बढ़ने से शरीर में मार्गावरोध होने लगता है। परिणामतः धातुओं का पोषण ठीक से नहीं होता। साथ ही शरीर की चयापचय प्रक्रिया द्वारा निर्मित मल भी इधर–उधर जमा रह जाता है। परिणामस्वरुप रोग की उत्पत्ति होती है। इन दिनों में **महाशिवरात्रि** का पर्व भी आता है। भगवान भोलेनाथ को **'मृत्युंजय'** नाम से भी जाना जाता है। अर्थात ''मृत्यु'' के ऊपर जो ''विजय'' दे सकते हैं।

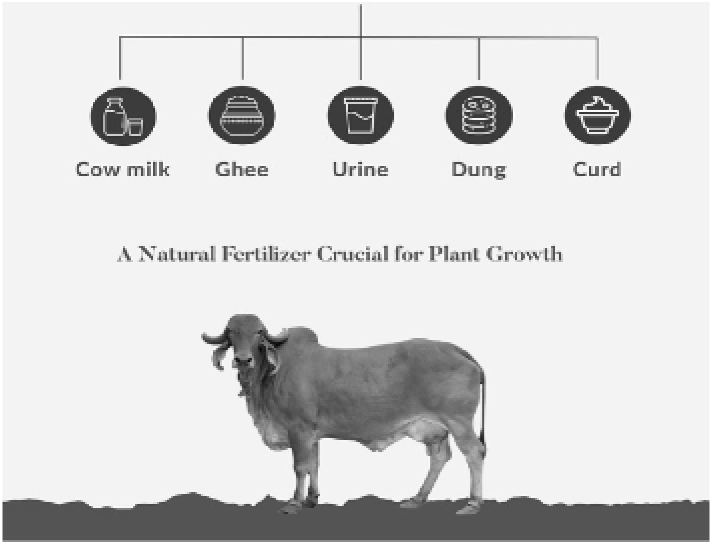

हेमंत ऋतु की ठंडक अभी भी रात्रि में बाकी है, परंतु दिन में गर्म होना संक्रांति के बाद शुरू होता है। **ग्रीष्म ऋतु एवं हेमंत ऋतु के बीच का समय यानी ''वसंत ऋतु''।** इस समय सर्दी, खांसी, बुखार, अस्थमा आदि के कारण लोग परेशान दिखते हैं। इस समय वातावरण में निर्मित विषाणुओं को

दूर भगाने हेतु **''हवन''** का करना लाभदायक होता है। **''महाशिवरात्रि''** का पर्व भी ठीक इसी समय मनाया जाता है। हवन के लिए गोवंश के गोबर के बने उपलों का उपयोग गोघृत समेत किया जाता है। विशिष्ट हवन सामग्री का भी उपयोग उसमें होता हम हमेशा देखते हैं। उसके पीछे वैज्ञानिक कारण हैं, जिन्हें प्रयोगशालाओं में भी परखा गया है। हवन में निर्मित शुद्ध वायु के कारण विषाणु वहाँ से दूर भागते हैं, अतः वहाँ रहने वाले पेड़, पौधे, जानवर, प्राणी तथा मनुष्य सभी को सुरक्षा मिलती है।

पूजा–अर्चना के समय भगवान भोलेनाथ जी को **''पंचामृत''** का अभिषेक किया जाता है। पंचामृत में भारतीय वंश की देसी स्वस्थ गाय का दूध, उसी दूध से निर्मित मिट्टी के बर्तन में तैयार हुआ दही, इस दधि का मंथन करके निकाला गया मक्खन, जिसे गरम करके बना हुआ गोघृत, शर्करा एवम् शहद के द्वारा शिवजी का अभिषेक होता है। इस पंचामृत को मिट्टी को समर्पित किया जाता है। देसी गाय के दूध एवम् दही में जीवाणु होते हैं, तथा अन्न, घी, शहद में संचित जल भी शुद्ध होता है, जो संपूर्ण पर्यावरण के लिए औषधि का कार्य करता है। जलचर सृष्टि पूर्णरूप से इस संचित जलचर पर ही आश्रित होती है। बारिश का होना तो कुछ समय ही होता है, परंतु यह वर्षा का संचित जल सभी जगह भूमि में कुआ, तलाब, नदी के द्वारा पुनः उपयोग में लिया जाता है।

संपूर्ण गोवंश द्वारा दिया गया गोबर–गोमूत्र अगर हमने नहीं उपयोग में लिया तब भूमि में ही जाता है। भारतीय वंश के गाय, बैल, नंदी, उनके बच्चे आदि सभी का गोबर–गोमूत्र उनके जन्म से लेकर मृत्यु तक अविरत प्राप्त होता है। अतः भूमि का संस्कार गोबर–गोमूत्र के द्वारा निरंतर होता रहता है। परिणामस्वरूप हमारी भूमि का स्वास्थ्य उत्तम रहता है। फलस्वरूप उससे प्राप्त अन्न भी विषरहित रहता है।

भारत की विविधता में विभिन्न त्यौहार अलग–अलग पद्धति से मनाए जाते हैं। उनके भोग भी प्रांतशः अलग–अलग रहते–दिखते है। प्रत्येक देवता का कोई पशु, पक्षी वाहन रूप में वर्णित है। भगवान शिवजी का वाहन है–नंदी। शिवालयों में उनके साथ नंदी जी भी विराजमान रहते हैं। मान्यता है कि हमारी मांग अगर हम नंदी जी के दाहिने कान में कह दें तब वे निश्चित ही शिवजी तक हमारी माँग पहुँचाकर उसे पूर्ण कराने में विशेष सहयोगी सिद्ध होते हैं। अतः सावन महिने में, शिवरात्रि के दिन और वर्ष की दोनों नवरात्रियों में तथा हर सोमवार के दिन ज्योतिर्लिंग के स्थान में शिवजी के साथ ही नंदी जी की पूजा–अर्चना श्रद्धा के साथ की जाती है। नंदी जी के कान में अपनी **''मनोकामना''** का गुप्त संदेश भी देते हुए आपने अनेक लोगों को देखा होगा। सोचकर देखें की अगर पत्थर के नंदी जी हमारी मनोकामना पूर्ण करने में सहायक हो सकते हैं, तो अगर हम जीवित नंदीजी की सेवा करें तो क्या हमारी मनोकामना जल्द–से–जल्द पूर्ण हो सकती है। हमारा अनुभव ही हमें वो विश्वास दे सकता है। अतः कभी तो हमें नंदी सेवा के प्रति एक कदम आगे बढ़ाना ही होगा। हम नंदी जी की सेवा निम्न प्रकार से कर सकते हैं :–

1. गोवंश सेवा में यथाशक्ति अपना योगदान देवें एवम् प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप में गोवेसा से जुड़ जाएं।
2. गोवंश आधारित कृषि द्वारा ही प्राप्त अन्न सेवन का आग्रह रखें।
3. गोशालाओं द्वारा निर्मित वस्तुओं का दैनिक जीवन में अधिक–से–अधिक उपयोग करें।
4. गोवंश दान, उनका एक दिन का, एक माह का, एक वर्ष का चारे का खर्च गोपालक को देवें।
5. पंचगव्य के उत्पादों का विज्ञान समाज तक पहुँचाकर जन जागरण करें।
6. गोबर–गोमूत्र से उत्पन्न वस्तुओं का विशेषरूप से उपयोग अपने परिवार के लिए नित्य करें–कराएं।
7. पंचगव्य के वैज्ञानिक शोध की जानकारी NRPAG वेबसाइट से प्राप्त कर जनसामान्य तक पहुँचाएं।

अधिक जानकारी के लिए गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र के शिवाजीनगर दवाखाने से 9405701253 पर संपर्क कर चिकित्सकीय परामर्श ले सकते हैं।

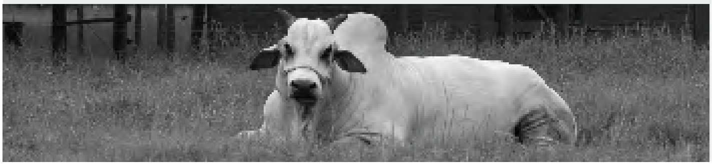

पूजा पाराशर (कवयित्री, स्वतंत्र लेखिका)

फिल्म 'गोदान' और उपन्यास 'गोदान'

06 फरवरी, 2026 में रिलीज होने वाली फिल्म 'गोदान' आज चर्चा का विषय है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने हाल ही में फिल्म का ट्रेलर और पोस्टर लॉन्च किया। उत्तराखंड के पर्यटन मंत्री सतपाल महाराज और मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भी इस फिल्म की सराहना की है। यह मात्र एक फिल्म नहीं, अपितु भारतीय संस्कृति और आधुनिक विज्ञान के संगम की एक अनोखी कहानी है। यह फिल्म उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद जी द्वारा 1936 ई. में रचित 'गोदान' पर आधारित है। 90 वर्षों के बाद भी कहानी 'गोदान' के मूल भावों को समेटते हुए उसे आज के आधुनिक परिवेश में ढाल कर बनाया गया है।

फिल्म की कहानी एक वैज्ञानिक के इर्द–गिर्द घूमती है जो आधुनिक चिकित्सा और विज्ञान में पूर्ण विश्वास रखता है। उसके जीवन में तब मोड़ आता है जब **'सुरभि'** नाम की एक देसी गाय का प्रवेश होता है। पहले वह वैज्ञानिक गौ–सेवा और परंपराओं को केवल अंधविश्वास मानता है, परंतु धीरे–धीरे वह गाय के वैज्ञानिक महत्व और पंचगव्य की शक्ति को समझने लगता है। यह फिल्म दिर्शाती है कि कैसे एक व्यक्ति अपनी जड़ों से दूर होकर वापस अपनी संस्कृति और प्रकृति की ओर लौटता है।

आधुनिक पीढ़ी (युवाओं) को गौ–माता के आध्यात्मिक और वैज्ञानिक महत्व से परिचित कराना, पंचगव्य का महत्व अर्थात् यह बताना कि दूध, दही, घी, गोमूत्र और गोबर केवल धार्मिक वस्तुएँ नहीं हैं, अपितु स्वास्थ्य, जैविक खेती और पर्यावरण के लिए एक वरदान हैं। **फिल्म संदेश देती है कि "गाय समस्या नहीं, अपितु समाज की कई समस्याओं (जैसे बीमारी, मिट्टी की उर्वरता, आर्थिक तंगी) का समाधान है।"**

फिल्म में गौ–संरक्षण से जुड़ी कुछ वास्तविक घटनाओं को भी शामिल किया गया है जिससे यह दर्शकों को अधिक प्रामाणिक लगे। यह फिल्म सनातन परंपरा और आधुनिक विज्ञान के बीच एक पुल बनाने का प्रयास करती है। मुख्य कलाकार के रूप में साहिल आनंद, उपासना सिंह, राजेश जैस और मनोज जोशी ने भूमिका निभाई हैं एवं इसके निर्देशक विनोद चौधरी हैं। फिल्म की महत्ता को देखते हुए निर्माताओं ने इसे विभिन्न राज्यों में टैक्स–फ्री करने की अपील की है।

गोदान' (मुंशी प्रेमचंद) उपन्यास का 1963 में भी बेहतरीन फिल्मी रूपांतरण किया गया है, जिसका निर्देशन त्रिलोक जेट्ली द्वारा किया गया। इसमें राज कुमार ने होरी और कामिनी कौशल ने धनिया की सशक्त भूमिका निभाई। फिल्म ग्रामीण ऋणग्रस्तता, सामाजिक शोषण और होरी की एक गाय पालने की अधूरी इच्छा को

मार्मिकता से दिखाती है। पंडित रविशंकर का शास्त्रीय संगीत और **'पीपल के पतवा'** जैसे गीत इसकी आत्मा हैं। मुहम्मद रफी, मुकेश, आशा भोसले, मन्ना डे और लता मंगेशकर के द्वारा गाए गए गीत, संगीत प्रेमियों के बीच आज भी बहुत लोकप्रिय हैं। व्यावसायिक रूप से औसत रहने के बाद भी यह फिल्म अपनी कलात्मकता और यथार्थवाद के लिए आज भी एक क्लासिक मानी जाती है।

'गोदान' (1936) – मुंशी प्रेमचंद

यह मात्र एक उपन्यास नहीं, बल्कि भारतीय कृषक जीवन का सबसे प्रामाणिक और हृदयविदारक दस्तावेज़ है। यह एक ऐसे किसान **'होरी'** की कहानी है, जिसकी पूरी ज़िंदगी एक गाय पाने की लालसा और उसके बाद उस लालसा की कीमत चुकाने में बीत जाती है। **'गोदान'** का अर्थ है मृत्यु के समय गाय का दान करना, जिससे आत्मा को **'वैतरणी'** नदी पार करने में आसानी हो। लेकिन प्रेमचंद ने इस धार्मिक कर्मकांड को एक सामाजिक विडंबना के रूप में प्रस्तुत किया है। उपन्यास का नायक होरी एक मर्यादावादी किसान है। वह कर्ज, लगान और समाज के ठेकेदारों (साहूकार, पंडित, जमींदार) के बीच इस कदर पिसा हुआ है कि उसकी ईमानदारी ही उसका सबसे बड़ा बोझ बन जाती है।

प्रेमचंद ने यहाँ होरी और धनिया के माध्यम से ग्रामीण संघर्ष और मालती–मेहता के माध्यम से शहरी बौद्धिकता को आमने–सामने रखा है। होरी की मृत्यु व्यवस्था की क्रूरता का प्रतीक है। वह दिन–रात मेहनत करता है ताकि एक गाय पाल सके, लेकिन अंततः वही समाज, जो उसे जीवित रहते एक

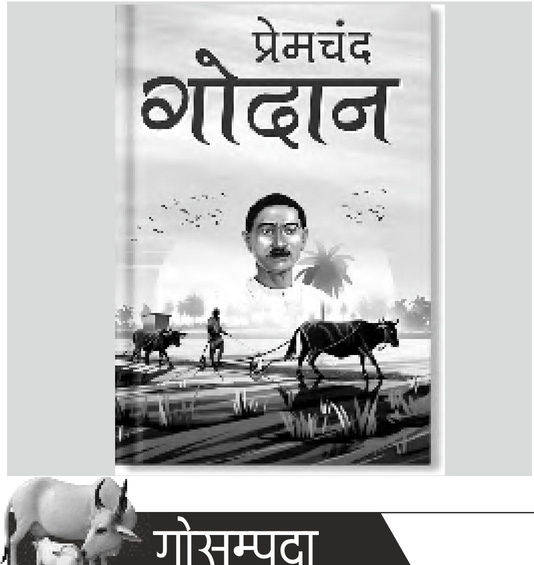

गाय नहीं दे सका, उसकी मृत्यु पर उसके परिवार से 'गोदान' की माँग करता है। यह उपन्यास धर्म के नाम पर होने वाले पाखंड और सामंती व्यवस्था के क्रोष को उजागर करता है। उपन्यास का अंत सबसे अधिक पीड़ादायक है। होरी लू लगने और अत्यधिक थकान के कारण मरणासन्न स्थिति में है। उस समय गाँव के पंडित दातादीन आते हैं और धार्मिक कर्मकांड की बात करते हैं।

पंडित दातादीन – "होरी अब जा रहा है, इसका गोदान करा दो धनिया! बिना गोदान किए इसकी आत्मा को शांति नहीं मिलेगी। वैतरणी कैसे पार करेगा? "धनिया, जो जीवन भर संघर्ष करती रही, अपने मृतप्राय पति को देख रही है। उसके पास घर में एक पैसा भी नहीं है। वह सुबकते हुए अपनी साड़ी के पल्लू से लिपटे हुए कुल बीस पैसे (कहीं–कहीं तीन आने का उल्लेख है) निकालकर पंडित के चरणों में रख देती है।

धनिया – "महाराज, घर में न गाय है, न बछिया, न पैसा। यही इनका गोदान है... और यही इनकी वैतरणी है।" यह संवाद उस भयावह वास्तविकता को दर्शाता है जहाँ एक गरीब किसान के लिए मृत्यु के बाद की 'वैतरणी' (यमलोक की नदी) पार करना उतना कठिन नहीं है, जितना जीते–जी गरीबी और शोषण की वैतरणी को पार करना था। धनिया का यह कटाक्ष धर्म की जड़ता पर सबसे बड़ी चोट है। ऋग्वेद के 'परिशिष्ट' भाग (खिल– सूक्त) में उल्लेखित :

"प्रजाभ्यः स्वस्ति (अस्तु)।
महीषाः महीं न्यायेन मार्गेण परिपालयन्तां।
गोब्राह्मणेभ्यः नित्यं शुभं अस्तु।
समग्राः लोकाः सुखिनो भवन्तु।।
ॐ शांतिः शांतिः शांतिः।।"

'अर्थात् संसार के सभी जीवित प्राणियों (प्रजा) का मंगल हो। सभी सुरक्षित रहें और सभी का कल्याण हो। पृथ्वी पर शासन करने वाले नेता या राजा, न्याय के मार्ग पर चलते हुए प्रजा का पालन–पोषण करें। गौओं (जो उर्वरता और जीविका की प्रतीक हैं) और ब्राह्मणों (जो ज्ञान और आध्यात्मिकता के संरक्षक हैं) का सदा शुभ हो। प्राकृतिक संसाधन और शुद्ध ज्ञान हमेशा सुरक्षित रहें, क्योंकि इनके बिना समाज जीवित नहीं रह सकता। समस्त लोकों में निवास करने वाले सभी जीव सुखी रहें। इसमें किसी जाति, धर्म या देश की सीमा नहीं है, बल्कि संपूर्ण ब्रह्मांड के सुख की प्रार्थना है।'

हरिशंकर दीक्षित (पथिक)

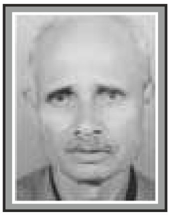

अतिघातक है गोवंश की उपेक्षा-तिरस्कार

गोवंश के पश्चात् अन्तिम जैविक रचना मनुष्य है, जिसे ईश्वर ने गौ पालन–पोषण और उसकी रक्षा करते हुए इसकी शक्ति–सम्पदा का सदुपयोग करके अपना जीवनयापन करने के लिये प्रत्येक प्राणी से विलक्षण शरीर और उन्नतशील बुद्धि देकर की है। अपनी इसी बुद्धि के आधार पर हमारे आदि पूर्वजों ने सृष्टिरूपी ईश्वरीय कौतुक को जाना–समझा और ईश्वरीय इच्छानुसार मानव कर्तव्यों (धर्म) का निर्धारण कर संसार को उपदेश रूप में दिया। अतः धर्म को साम्प्रदायिक आधार पर परिभाषित करने वाले समस्त लोगों को धर्म के वास्तविक अर्थ को जान–समझकर अपनी भूलों को सुधारने का लोकमंगलकारी कार्य शीघ्रातिशीघ्र प्रारम्भ करना चाहिये। सम्पूर्ण विश्व में धर्म की त्रुटिपूर्ण व्याख्या **''अपनी ढपली अपना राग''** के आधार पर होने के कारण वर्तमान काल में सम्पूर्ण विश्व विनाश की कगार पर खड़ा है।

दुःखद यह है कि जिस पावन धरती पर धर्म का ज्ञान ईश्वरेच्छावश हमारे आदि पूर्वजों को हुआ और वे संसार को उपदेश देकर विश्वगुरू के आसन पर प्रतिष्ठित हुए; आज उन्हीं के वंशज हम लोग धर्म का मर्म और अर्थ भूल गये हैं या जान बूझकर उद्घाटित नहीं करना चाहते। गौ पालन–पोषण और रक्षण मनुष्य का परम कर्तव्य अर्थात् परम धर्म है। गोवंश की वर्तमान उपेक्षा–तिरस्कार और इसके प्रति होने वाले प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष अत्याचारों का होना और जनता–जनार्दन द्वारा उसकी अनदेखी से यह स्पष्ट है कि हम धर्म का वास्तविक अर्थ जानते ही नहीं हैं।

अखिल ब्रह्माण्डीय सृष्टि रचना का इतिहास हमारे प्रमुख धर्माचार्य जो शंकराचार्य के रूप में प्रतिष्ठित हैं, भली–भाँति जानते हैं। हमारी धरती पर जैविक सृष्टि में गोवंश का महत्व और महत्ता को चारों आदरणीय शंकराचार्यों से अधिक कौन जानता है। शंकराचार्य शंकर + आचार्य दो शब्दों का योग है। इसका अर्थ है भगवान शिव के

उपदेशों का भलीभाँति ज्ञाता होना। **भगवान शिव पशुपति के नाम से भी ख्यात हैं। पशुपति का अर्थ है पशुओं का स्वामी। इस प्रकार भगवान शिव पशुओं के स्वामी हैं। इनका वाहन नन्दी है जो गोमाता की शक्तिरूपी सन्तान है। इस कारण भगवान शिव को गोमाता अतीव प्रिय हैं।** एक बार संकटकाल में गोमाता के गर्भ में उनके शरण लेने से यह सुस्पष्ट भी है।

उपरोक्त कथ्य से आशय यह है कि भगवान शिव के वाहन नन्दी और आपातकाल में उन्हें शरण देने वाली गोमाता अर्थात् सम्पूर्ण गोवंश के प्रति जनता आदर–सम्मानभाव सदैव बनाये रखते हुए उसका पालन–पोषण और रक्षा करती रहे; ऐसे उपदेश निरन्तर देते रहना हमारे आदरणीय शंकराचार्यों का दायित्व है। अब से पाँच–छः दशक पूर्व तक दण्डी सन्यासी पदात् भ्रमण करते हुए गाँव–गाँव जाकर गोवंश के महत्व और महत्ता का उपदेश देते थे। हमारे शंकराचार्य भी दण्डी सन्यासियों में से ही योज्ञता–पात्रता के आधार पर पीठासीन होकर प्रतिष्ठित होते रहे हैं। गोरक्षा हेतु इन्होंने इन्दिरा काँग्रेस की सरकार को यह कहते हुए कि आपकी पार्टी का चुनाव चिह्न गाय और बछड़ा है; आपको चाहिये कि सम्पूर्ण देश में गोवंश की हत्या रोकने के लिए कानून बनायें और उल्लंघन करने वालों का दृढ़ता से दमन करें, संसद भवन के सामने आन्दोलन भी किया था, किन्तु श्रीमती गाँधी ने गोहत्यारों का दमन करने के स्थान पर भीषण लाठी–गोली चलवाकर आन्दोलनकारी गोभक्तों का ही दमन किया था। इस आन्दोलन में देश के कोने–कोने से लाखों

गोभक्त आये थे। निरंकुश श्रीमती गाँधी के दमनचक्र ने ऐसा आतंक मचाया था कि अब तक गोरक्षा हेतु दृढ़ आन्दोलन करने का साहस लोग नहीं कर सके। फलस्वरूप गोहत्या कर गोमांस के निर्यात से सरकारें योजनायें चलाती रहीं और गोहत्यारे मालामाल होते रहे और हमारा गोवंश कटता–मरता रहा।

सत्य तो यह है कि **''दो बैलों की जोड़ी''** चुनाव चिह्न वाली कांग्रेस के मुखिया पंडित नेहरू जो कहते थे कि मैं दुर्घटनावश ही हिन्दू हूँ, ने सोवियत रूस से प्रभावित होकर अपने राजनीतिक गुरु महात्मा गाँधी तक को उपेक्षित कर, कृषि क्षेत्र से गोवंश को हटाकर मशीनों द्वारा खेती करने की योजना बनाकर देश के अन्नाभाव को दूर करने का मन बना लिया था। **यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि हमारे देश में साम्प्रदायिक आधार पर बंटवारे के बाद यदि सम्पूर्ण आबादी की अदला–बदली हो जाती तो शेष जनता के लिये पर्याप्त अन्न ही नहीं आजीविका के साधन भी उपलब्ध होते, किन्तु हमारे अदूरदर्शी कर्णधार शीघ्र सत्तासीन होने के लोभ में अँग्रेजों और मुस्लिम राजनीति के कूटजाल में ऐसा फँसे कि इन्होंने आनुपातिक रूप से अधिक भूमि देने के पश्चात भी आबादी की अदला–बदली न करके वे समस्त कारण बनाये रखे जिनके आधार पर देश का विभाजन हुआ था।**

हमारे अविवेकी–अदूरदर्शी कर्णधारों ने सम्प्रदायवादी जेहादियों के जेहादी आतंक से भयभीत होकर मजहबी आधार पर देश विभाजन स्वीकार कर लिया, किन्तु आबादी की पूर्ण अदला–बदली न करके देश के साथ ऐसा घात किया जिसे इतिहास कभी क्षमा नहीं करेगा। विभाजन के पश्चात् भी हमारे देश पर वर्तमान भारत के मुसलमानों की संख्या से पाकिस्तान और बंग्लादेश के हिन्दुओं की वर्तमान संख्या

घटाने पर जो शेष बचता है उतना अतिरिक्त जन भार हमारा देश ढो रहा है। हमारे पूर्वजों की इस भारी चूक को सुधारना अब अति कठिन है किन्तु इससे सीख लेकर हम सावधान रहते हुए मजहबी आधार पर पुनः विभाजन की माँग की योजना चलाने वालों को मुंहतोड़ उत्तर दे सकते हैं। यह मजहबी उन्मादी गोवंश की कृषि तथा उद्योगों में उपयोगिता समाप्त होने से अति प्रसन्न हैं और चोरी–छुपे तस्करी द्वारा गोवंश को बंग्लादेश तक भेजकर अकूत धन कमाते हैं तथा इस धन का उपयोग अवैध मजारें, मदरसे और मस्जिदें बनाकर इस्लाम की शक्ति बढ़ाने का कार्य कर रहे हैं।

योरोप में प्रारम्भ औद्योगिक क्रान्ति ने वहाँ के देशों को साम्राज्य विस्तारवाद का रास्ता दिखाया। इन देशों ने मशीनी उद्योगों के बल पर मानव और पशु शक्ति आधारित उद्योगों को ध्वस्त करके, प्राकृतिक आधार पर जीवनयापन करने वाले देशों की खनिज सम्पदा को लूट–खसोटकर और जनता को दास बनाकर, उसका श्रम लूटकर अथाह सम्पदा अपने देश भेजी। हमारा देश भारत भी इनकी चालों में फँसकर इन्हें व्यापार करने की सुविधा देकर दासता के चक्रव्यूह में फँसकर डेढ़–सौ साल तक शोषित, पीड़ित, प्रताड़ित ही नहीं दास तक रहा।

अँग्रेजों के शासनकाल में हमारे देश का वस्त्र उद्योग अति दुष्प्रभावित हुआ, किन्तु कृषि तथा अन्य बैल आधारित उद्योगों पर मशीनी औद्योगिक क्रान्ति का प्रभाव नहीं पड़ा। इन क्षेत्रों पर प्रभाव आजादी प्राप्त होने के एक दशक पश्चात् पड़ना तब प्रारम्भ हुआ जब कृषि क्षेत्र में मशीनी हल (ट्रैक्टर) का प्रवेश हुआ। धीरे–धीरे इन मशीनी हलों ने बड़े किसानों को आकर्षित कर कृषि क्षेत्र से बैलों को बहिष्कृत करना प्रारम्भ किया। साथ–ही–साथ तेल–गुड़ उद्योगों में भी मशीनी कोल्हुओं के प्रवेश ने **''करेला वह भी नीम चढ़ा''** कहावत चरितार्थ कर दी।

गोवंश के दुख से दुखी धरती माता की दशा देखकर हमें सचेत होकर इसके दुखों को दूर करने का प्रयास यथाशीघ्र करना चाहिये। गोवंश धरती माता का सहचर और प्रकृति का पोषक है। इसका आदर सम्मान मातृ–पितृवत करते हुए आशीर्वाद रूप में इसकी शक्ति–सम्पदा का सदुपयोग करके ही हम धरती के दुखों को दूर कर सकेंगे। ऐसा करने से गोवंश का दुख तो दूर होगा ही साथ ही साथ कृषि क्षेत्र पर्यावरण प्रदूषण में वृद्धि करने के दोष से भी बचेगा।

सर्वाधिक उत्तम बात यह है कि गोवंश आधारित कृषि करने से अन्न–फल और जल आदि फिर से विशेष गुण सम्पन्न होकर हमारे स्वास्थ्य के लिये हितकर होंगे। विलुप्त होती जा रही पक्षियों की प्रजातियों की संख्या में वृद्धि होने लगेगी। हमारे देश में सर्वत्र सुख–शान्ति का वातावरण होने से हम अन्य देशों के लिये उदाहरण बन सकेंगे, ठीक वैसे ही जैसे हमारे देश में अरुणाचल और सिक्किम जैसे प्रदेशों में जल, वायु अन्न और फलादि सब पूर्णरूपेण प्राकृतिक और जैविक हैं। यह सब हो सकता है केवल गोवंश का आदर सम्मान करते हुए उसका पालन–पोषण और रक्षा भलीभाँति करके उसके आशीर्वाद रूप में उसकी शक्ति–सम्पदा का सदुपयोग उन्नत कृषि यन्त्रों के साथ कृषि क्षेत्र में फिर से प्रारम्भ करने से। अन्यथा हम भविष्य में और अधिक विषैला अन्न–फल–जल और वायु खा–पीकर घातक रोगों से पीड़ित होकर वैसे ही कल्पते–सिसकते मरेंगे जैसे आज हमारा गोवंश मरता जा रहा है।

मुरारी शरण शुक्ल (सह सम्पादक, हिन्दू विश्व)

गाय ही देवों की और देवत्व की आश्रयदाता है

गाय को घास सुख देता है, यह वर्णन सामवेद (1/2/1–5) में किया गया है। यहाँ इन्द्र की शक्ति और शक्तिशालियों के प्रति इन्द्र के प्रेम का वर्णन है, तो यह भी समझना उपयुक्त है कि घास से गाय शक्तिशाली होती है, अधिक दूध देने योग्य बनती है, बलशाली संतति उत्पन्न करने योग्य बनती है और गोदुग्ध का सेवन करने वाले इतने बलवान बन जाते हैं कि उनको सहयोगी रूप में पाकर इन्द्र प्रसन्न होते हैं। अर्थात् हरे, ताजे घासों का आहार पाकर पलने वाली गाय का दुग्ध आपको इन्द्र का सहचर अर्थात् धर्म का मार्गगामी बनाता है, आपको रीति–नीति और व्यवस्थाओं में विश्वास करने वाला बनाता है, अराजक नहीं बनने देता है। ऐसा बलशाली बनाता है, जिसकी अनेकानेक प्रशंसा करते हैं और जिन्हें देखकर इन्द्र भी सुखी होते हैं। यहाँ तीसरे मंत्र में गायों को यज्ञ के स्थान पर आमंत्रित किया गया है और यह भी कहा गया है कि गाय यज्ञ के लिए बहुत–सा दूध रूपी अन्न देने वाली हो। इसका अर्थ स्पष्ट है कि गाय न केवल दूध देने वाली प्राणी है, किन्तु वह अन्न उत्पादन में भी सहयोगी है। गाय का गोबर, गोमूत्र मृदा की उर्वरा शक्ति को उत्तम बनाने में सहायक है, यह तथ्य सामवेद की इन पंक्तियों के अन्तर्निहित भाव हैं।

रासायनिक उर्वरक व गोबर आधारित कृषि

रासायनिक उर्वरकों से जब खेती होने लगी तो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद बचे हुए रसायन को खपाने वाले व्यापारी भी खुश थे और उपज बढ़ जाने से किसान भी खुश थे, लेकिन इन उर्वरकों के प्रभाव से कैंसर, किडनी फेल्योर, हृदय रोग, ब्रेन और न्यूरो के अनेक रोग, अनेक प्रकार के चर्म रोग इत्यादि उपजने लगे, तब विश्व भर में रासायनिक उर्वरकों का मोह समाप्त होने लग गया और सम्पूर्ण जगत को जैविक खेती का महत्व समझ में आने लगा। आज जैविक कृषि का चलन बढ़ रहा है, गोबर से निर्मित उर्वरकों से होने वाली खेती के उत्पादों की मांग बहुत बढ़ गई है और इनका मूल्य भी बहुत मिलता है। यह बात सामवेद के स्वर्गिक छन्दों में आरम्भ से ही इंगित किया गया, लेकिन हम कुछ दशकों के लिए इसकी अनदेखी कर गए। सम्भवतः अब हम गाय और गोबर के इस महत्व को समझेंगे।

गाय असाध्य रोगों से बचाकर बलवान बनाती है

गाय का दूध पक्षाघात समेत न्यूरो के सभी रोगों की उत्कृष्ट औषधि है। इन रोगों को आयुर्वेद में वात रोग कहा गया है, अर्थात् गोदुग्ध एवं घृत वातनाशक हैं, लेकिन इसके लिए पृथ्वी भी गोरस से सेवित होना अनिवार्य है, जिससे चारा भी संतुलित हो जाए। गाय के दुग्ध का सेवन और दूध से बने दही, छांछ, घी का सेवन आपके दोनों अंगों (वाम और दक्षिण—left and right) को पूर्ण स्वस्थ करके आपके शरीर को स्वर्ण आभा सदृश चमकदार ओज प्रदान करने में सक्षम हैं। यहाँ यह भी भाव समाहित है कि एकांग में होने वाली समस्या अर्थात् पक्षाघात, लकवा और पोलियो उन्हें नहीं हो सकता है, जो गोदुग्ध और उससे व्युत्पन्न उत्पादों का सेवन करते हैं और गाय के गोबर, गोमूत्र के सहयोग से उपजाए गए अन्न का सेवन करते हैं, गोबर और गोमूत्र से सांद्रित अन्न और औषधि का सेवन करते हैं। दूसरे प्रकार से ऐसा भी समझना चाहिए कि जो उपरोक्त सेव्य पदार्थों का सेवन करते हैं, उन्हें न न्यूरो की कोई समस्या होगी, न मस्तिष्क से जुड़ी कोई समस्या होगी, न पक्षाघात होगा, न पागलपन, मिर्गी, हिस्टीरिया, उन्माद, आक्रामक व्यवहार की कोई समस्या होगी। गोदुग्ध, गोघृत पित्तशामक होने के कारण पित्त के उपद्रव से होने वाले रोगों से बचाकर संतुलित बल और बुद्धि से युक्त करता है आपको हमारी भारत भूमि की देशी गाय।

गोरस से उत्पन्न अन्न ही यज्ञ में अर्पित करने योग्य

अवटे यज्ञस्य मही रप्सुदा (सामवेद 1/2/3) अर्थात् हे गायों, तुम यज्ञ में बहुत—सा अन्न देती हो। इसका अर्थ यह है कि यज्ञ में वही अन्न अर्पण किया जा सकता है, जिसका उत्पादन देशी गाय के गोबर और मूत्र की सहायता से पालित पृथ्वी में हुआ हो और गोबर आधारित उर्वरकों से अन्न की उपज अधिक होती है, यह भी भाव वर्णन यहाँ उपलब्ध होता है। जहाँ रासायनिक उर्वरक उपयोग हुए हों, वह अन्न यज्ञ के लिए सर्वथा वर्जित, त्याज्य और अनुपयोगी है। वही अन्न देवता और इन्द्र ग्रहण करेंगे, जो गाय के गोबर, गोमूत्र, गाय के द्वारा छोड़े और मैले किए हुए चारे और राख के मिश्रण से तैयार उर्वरक से पालित—पोषित भूमि में उपजाया गया हो। ऐसा ही अन्न रोगशामक, रोगनाशक, शक्ति—वर्द्धक और आयुवर्द्धक होता है। इसके अतिरिक्त अन्य उर्वरकों (रासायनिक उर्वरक) से उत्पादित अन्न यज्ञ के लिए त्याज्य है।

गाय आपको वृत्र हन्ता बनाती है, इन्द्र बनाती है

गाय के दूध का सेवन आपको अतुलित बलशाली बनाती है। सोमलता के रस से जैसी संतुलित शक्ति इन्द्र को प्राप्त होता है, वैसी संतुलित शक्ति आपको गोरस से भी प्राप्त होती है। गोरस से आपको इतनी शक्ति प्राप्त होती है कि वृत्रासुर जैसे दुर्घर्ष शक्ति वाले रोगों का भी नाश कर के उत्तम स्वास्थ्य

प्राप्त कर सकते हैं और शक्तिमान हो जाने के कारण वृत्रासुर जैसे बलशाली आतंकवादियों, अत्याचारियों का वध करने में भी सक्षम हो सकते हैं। इतना बल भारत भूमि की देशी गाय से प्राप्त दूध, दही, घी और गाय की सहायता से उत्पादित अन्न में है। यह आपको इन्द्र की भांति श्रेष्ठ बल और बुद्धि से युक्त बनाती है।

यज्ञ और देवों को जो नहीं दे सकते वह अन्न खाने योग्य नहीं

यहाँ यह ध्यान देने योग्य बात है कि हम जो भी खाते हैं, वह पहले वासुदेवार्पणम् करके ही ग्रहण करते हैं। यज्ञ में अर्पण करके ही अन्न सेवन का विधान है। जो कुछ भी हम देवों को अर्पित नहीं कर सकते, यज्ञ में अर्पित नहीं कर सकते, वह स्वयं के भी खाने योग्य नहीं है। यदि गाय के गोबर के द्वारा उत्पादित अन्न ही देव ग्रहण करते हैं तो हमें भी वही अन्न सेवन करना चाहिए। रासायनिक उर्वरकों द्वारा उत्पादित अन्न रोगों का कारण बनते हैं, यह अब अनेक शोधों से पता चलने लग गया है। ये स्वास्थ्यकर न होने से शक्तिनाशक भी हैं और ऊर्जा असंतुलन उत्पन्न करने के कारण आपके मानस को भी नकारात्मक बनाते हैं तथा व्यवहार से जुड़ी अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ, विसंगतियाँ उत्पन्न करते हैं। अतः हमें गाय के दुग्ध एवं घी से स्वयं का स्वास्थ्य भी संवारना चाहिए और गोबर आधारित उर्वरकों से भूमि के स्वास्थ्य को भी ठीक कर के यज्ञों में निवेदित किए जाने योग्य, देवों को अर्पण किए जाने योग्य अन्न उपजाने के लायक बनाना चाहिए। ऐसे उत्तम मनुष्य और भूमि का परिवेश बनाने के लिए देव भूमि पर आते हैं, ऐसा परिवेश होने पर देव भूमि पर आते हैं, ऐसा होने पर मनुष्य भी देव बन जाते हैं और इसी स्थिति में देव इस भूमि पर निवास करते हैं। अतः गाय ही देवों की और देवत्व की आश्रयदाता है।

murari.shukla@gmail.com

गाय बचेगी - देश बचेगा

– आचार्य डॉक्टर विवेक

सबसे बड़ा धन, है गोधन,
जो सारे भारत की है ढाल।
थी कभी गौ–माता घर में,
उपजाऊ भूमि बेमिसाल।।
गोबर से था सोना उपजे,
गोमूत्र रहा अमृत समान।
दूध–दही से स्वस्थ मनुज,
मन में थी शक्ति कमाल।।
हाथ उठाकर आवो बोले !
जय गोमाता! जय गोपाल!

शास्त्रों में भी यही कहा है,
गोरक्षा खेती धर्म महान।
गाय जहाँ है, वहाँ हरियाली,
वहीं बसते अपने भगवान।।
रोम रोम से बहती है ऊर्जा,
करती जो सबका कल्याण।।
हाथ उठाकर आवो बोले !
जय गोमाता! जय गोपाल!

पर अब देखो हाल हमारे,
खाती गाय कूड़ा, पॉलिथीन।
हमने त्यागी उसकी ममता,
क्यूं अपनाई केवल मशीन।।

मिट्टी मरी, हरियाली रूठी,
सूख गया जीवन का सार।
जागो भारत, लौटो फिर से,
गाय तुम्हारा है आधार।।
हाथ उठाकर आवो बोले !
जय गोमाता! जय गोपाल!

जड़ों को लौट चले आवो
गोवंश खेत में लाओ।
गोबर–गोमूत्र ही अपनावो,
हरियाली फिर लौटावो।।
नेपीयर घास लगाओ,
चारा हरा सालभर पाओ।।
हाथ उठाकर आवो बोले !
जय गोमाता! जय गोपाल!

हर घर आँगन में हो गाय,
देशी रूप निराली।
रोम–छाँव में सुख पाये,
मिटे दुखों की काली।।
कृषि, धर्म, संस्कृति को,
आवो मिलकर अपनायें।।
हाथ उठाकर आवो बोलें!
जय गोमाता! जय गोपाल!

गोवंश अपनायेगा किसान,
होगा भारत बड़ा महान।
गाय बचेगी, देश बचेगा,
सच्चा है यही अभियान।।
धरती गाए, नभ भी झूमे,
झूम रहा है हर इंसान।।
हाथ उठाकर आवो बोले !
जय गोमाता! जय गोपाल!

शंकरलाल (अ.भा.गौ. सेवा टोली सदस्य)

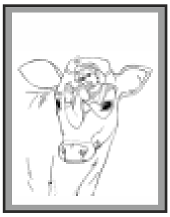

भारतीय गाय एक अमूल्य निधि

हमारी देसी गाय भगवान की देन है। समुद्र मंथन से कामधेनु नाम की एक गाय निकली थी। भारत की समस्त देसी गायें उनकी ही संतानें हैं। विदेशी पशु (जर्सी) गाय नहीं है। हमारी गायें पशु नहीं हैं। **'तिलम् न धान्यम, पशु न गावः।'** इस विदेशी पशु का निर्माण निम्न तीन पशुओं से मिलकर हुआ है– 1. हमारे यहाँ का **सूअर** 2. पहाड़ी **याक** 3. यूरोप का **युरास** नाम का जानवर ।

न्यूजीलैंड की संसद में बहुत बड़ी बहस हुई, जिसमें से निकलकर आया **'डेविल इन द मिल्क' (दूध में राक्षस)।** वैज्ञानिकों ने शोध में पाया कि उस पशु के दूध में बीटा–केसीन–7 मॉर्फिन जैसा जहर है, जिससे किसी भी प्रकार की बीमारी हो सकती है। जबकि भारतीय गाय के दूध और गोमूत्र में स्वर्ण की मात्रा (झार) पाया जाता है जिसके कारण उसका दूध, घी, और गोमूत्र में पीला रंग होता है।

दोनों नस्लों में अंतर

- ❖ भारतीय गाय की आंतें 180 फुट लंबी होती हैं, विदेशी पशु की आंतें केवल 90 फुट लंबी होती हैं। हमारी गाय का गोबर बंधा रहता है, उसका गोबर गिरकर बिखरता है।
- ❖ हमारी गाय के गोबर में दुर्गंध नहीं आती, उसके गोबर से दुर्गंध आती है।
- ❖ हमारी गाय का गोबर औषधि है, उसके गोबर में औषधीय गुण नहीं होते।
- ❖ हमारी गाय जब बोलती है तब उसमें 'माँ' शब्द निकलता है। उस पशु की आवाज कर्कश होती है।
- ❖ हमारी गाय की चमड़ी पतली है, उसकी चमड़ी मोटी है।
- ❖ हमारी गाय को मैंने 20 बार बच्चा देते देखा है, वह 6–7 बार से अधिक बच्चा नहीं देती।
- ❖ दुनिया में किसी भी जीव का मल–मूत्र खाने में काम नहीं आता, पर भारतीय गाय का गोबर–गोमूत्र औषधि हैं।
- ❖ हमारी गाय के गल–कंबल (गले में लटकने वाली त्वचा) होता है, उस पशु में गल–कंबल नहीं होता।
- ❖ हमारी गाय के सुंदर सींग होते हैं, उसमें वह सुंदरता नहीं होती।
- ❖ हमारी गाय का थुई (कुकूद) होती है। उसमें थूई नहीं होती। भारतीय गाय में सूर्यकेतु नाड़ी होती है, जो धूप में घूमने पर सक्रिय होती है, जिसके कारण उसके दूध, गोबर और गोमूत्र में स्वर्ण तत्व पाया जाता है। विदेशी पशु में यह संभव नहीं।
- ❖ भारतीय गाय की पीठ पीछे उठी हुई होती है, पीछे का भाग भारी और गोल होता है। विदेशी पशु की रीढ़–खंभ नुकीला व सीधा होता है।
- ❖ भारतीय गाय का गोबर – गोमूत्र धरती को उर्वर और विष–मुक्त बनाता है व पर्यावरण को शुद्ध करता है। विदेशी पशु में यह शक्ति नहीं होती है।

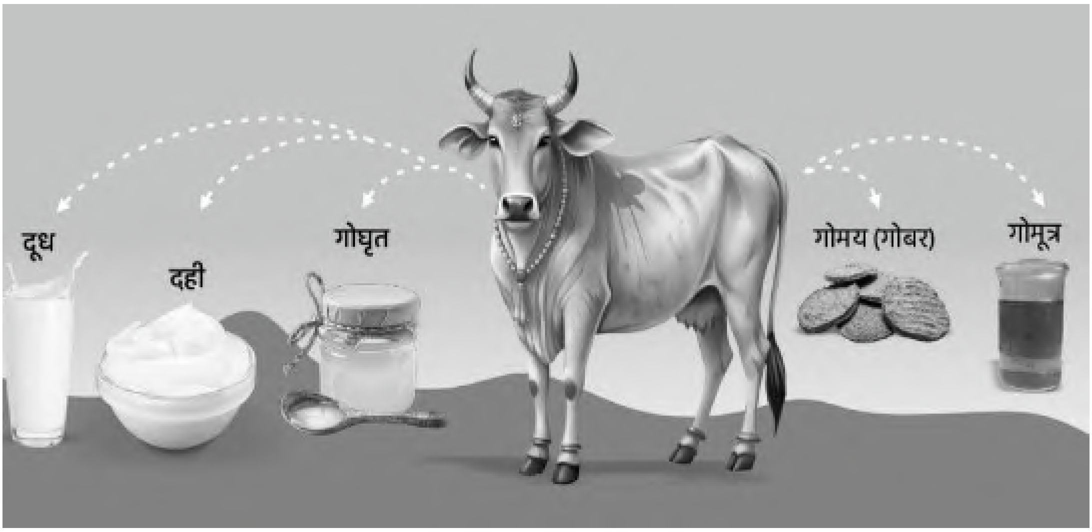

गोमूत्र

- ❖ नित्य स्नान करते समय पानी में थोड़ा गोमूत्र मिलाकर स्नान करने पर कोई चर्म रोग नहीं होता। वात–कफ प्रकृति के व्यक्ति यदि नित्य 20–30 मि.ली. गोमूत्र सेवन करें तो वे अनेक रोगों से बच सकते हैं।
- ❖ कोई घाव होने पर नीम की सूखी छाल को गोमूत्र में घिसकर लेप लगाने से घाव जल्दी ठीक होता है।
- ❖ हाथी पाँव रोग में नित्य गोमूत्र 20 मि.ली. पीना तथा दिन में तीन बार गोमूत्र की मालिश करने से वर्ष भर में फाइलेरिया (हाथी पाँव) ठीक हो जाता है।
- ❖ कर्क रोग (कैंसर)–नित्य सुबह–शाम 20–20 मि.ली. गोमूत्र, श्यामा तुलसी के 40 पत्तों को पीसकर–छानकर पीने से थर्ड स्टेज तक का कैंसर ठीक होते देखा गया है।
- ❖ घर में नित्य गोमूत्र का छिड़काव करने से नकारात्मक ऊर्जा का प्रवेश नहीं होता।

गाय का घी

रात को सोते समय घी को हल्का गर्म करके तीन–तीन बूँद दोनों नाक में डालने से निम्न बीमारियाँ ठीक होती हैं– "सिरदर्द, आधाशीशी (माइग्रेन) डिप्रेशन (अवसाद), अनिद्रा, खर्राटे आना, लकवा, नजला, साइनस, एलर्जी, मंदबुद्धि, पागलपन, कान का पर्दा फट जाना आदि। इनमें लकवा छोड़कर बाकी सब रोग दो महीने में ठीक हो सकते हैं। लकवे में लगभग सालभर लगता है।

कालामोतिया (ग्लूकोमा)

गाय का घी 6 बूँद, नारियल का तेल 3 बूँद हथेली में मिलाकर 5 मिनट तक नाभि में वर्ष भर नित्य लगाने से ग्लूकोमा ठीक हो सकता है।

सत् धोत घृत

सौ बार कांसे की थाली में पानी से धोया हुआ घी पुराने–से–पुराने घाव को जल्दी ठीक कर सकता है। जिनको चश्मा लगा है, नेत्र ज्योति कमजोर है–वे बंधु रात को सोते समय नित्य गाय का घी पैर की दोनों पगथलियों में कम–से–कम पांच मिनट मालिश करना, घी का दोनों आँखों में काजल लगाएं, सुबह उठते ही अपना बासी थूक एक उँगली से एक आँख में, दूसरी उँगली से दूसरी आँख में नित्य लगाएं, ऐसा कम–से–कम एक साल करें।

गाय का दूध

आँखें दुखने पर : गाय के दूध में रुई भिगोकर दोनों आँखों पर रखें, 15 मिनट में आराम मिलेगा।

पित्त बढ़ने पर : गाय के दूध को एक बार उबालें। एक उफान आते ही उतार लें। एक चम्मच पिसी मिश्री डालें, दो चम्मच गाय का बिलोना घी डालकर मिलाएँ और कुनकुना सुबह–शाम कम–से–कम 2 महीने पीएँ।

पथ्य : मावे से बने खाद्य पदार्थ, खट्टी, तली हुई, ज्यादा मिर्च–मसाले नहीं खाएं व गर्म चीज नहीं पीएं, भूखा नहीं रहना है।

क्या खा सकते हैं : आगरा का पेठा, जलेबी, गुलकंद, रसगुल्ला, मिश्री,

धनिये की पंजीरी, दूध की लस्सी, कुल्फी, सामान्य भोजन आदि।

घुटने के दर्द में — 150 ग्राम गाय के घी में एक चुटकी हल्दी डालकर उबालें, एक उफान आते ही उतारें। दो चम्मच गाय का बिलोना घी मिलाकर फेंटें, गिलास झाग से भर जाए तब खड़े–खड़े पिएँ। सुबह–शाम एक महीना पीने से लाभ होगा।

गाय की छाछ

तक्रासव : चार लीटर ताजी छाछ (मक्खन निकली हुई), चार लीटर पानी, 200 ग्राम हल्दी का चूर्ण, 200 ग्राम सेंधा नमक, 200 ग्राम राई। इन सबको पीसकर स्टील के पात्र में मिलाएँ। ऊपर कपड़ा बाँधें, ताकि कोई जीव न गिरे। चार दिन तक सुबह 10 से सायं 4 बजे तक धूप में रखें। सायंकाल उठा लें। पाँचवें दिन दोहरे कपड़े से छानना, जो पतला पानी निकलेगा वह तक्रासव होगा। उसे काँच के बर्तन में रखें। अब उसमें से 20 मि.ली. (चार चम्मच) सुबह नाश्ते के बाद, दोपहर व रात के भोजन के बाद 2 महीने नित्य लें। पेट के समस्त रोग ठीक हो सकते हैं– जैसे आंव, कब्ज, दस्त, आफरा, गैस, बवासीर, भगंदर, अम्लपित्त, संग्रहणी, अल्सर, पेप्टिक, मुँह में बार–बार छाले आना आदि।

गोमय–गोबर

- ❖ गाय के ताजा गोबर में थोड़ा खाने का कपूर मिलाकर लगाने से दाद, खाज, खुजली जैसे चर्म रोग ठीक होते हैं।
- ❖ गोबर में गोमूत्र मिलाकर स्लिप डिस्क, स्पॉन्डिलाइटिस, सर्वाइकल जैसे रोगों में एक घंटा लगाकर रखें, बाद में पौंछकर नारियल तेल लगाने से एक महीने में ये सब रोग ठीक होते हैं।
- ❖ **सहज प्रसव** — महिलाओं को प्रसव के समय दर्द होने पर 30 ग्राम गोमय रस व पांच तुलसी के पत्ते पीसकर पिलाने से 2 घंटे में सहज प्रसव होता है। इससे बच्चेदानी का मुँह खुल जाता है। अब तक हमने 10 हजार बहनों को यह दिया है, जिनका दो–दो बार ऑपरेशन हुआ है उनको भी लाभ होता है।

अन्य लाभ

- ❖ गोमय तिलक लगाने से बच्चों को नजर नहीं लगती।
- ❖ चाँदी की कटोरी में नित्य गाय का दूध जमाएँ। सुबह वह दही उसी कटोरी में गर्भवती महिला को आठ महीने खिलाएँ। इससे सुंदर, बुद्धिमान व सात्विक संतान होगी।
- ❖ **एक गाय–बैल–सांड़** के मरने पर भी तीन प्रकार की खादें मिलेंगीं– **समाधि खाद, सिलिका खाद व सींग खाद।** इससे बंजर भूमि उर्वर होती है एवं 25 लाख से अधिक का लाभ होता है। उत्पादन 20 प्रतिशत बढ़ जाता है। कोई भी गाय जीवन भर में इतना नहीं खाती।

डॉ. विजय लक्ष्मी

गाय के गोमूत्र की उपयोगिता

उत्तराखंड देवभूमि की संस्कृति में गौ सहित दुर्गा, सरस्वती आदि को माँ के रिश्ते से जोड़कर सम्मान करने की परंपरा है। इस राज्य में गौ, गंगा और हिमालय भारतीय संस्कृति की पहचान है। उत्तराखंड जैसे राज्यों में गौ–पालन पारंपरिक रूप से महत्वपूर्ण है। उत्तराखंड की बद्री गाय वास्तविक अर्थों में गोमाता है। यह गाय आकार में छोटी होती है। इसे उत्तराखंड की "कामधेनु" कहा जाता है। 18 सितंबर 2018 को उत्तराखंड सरकार ने गाय को "राष्ट्रमाता" घोषित करने का प्रस्ताव पारित किया, जिसे केन्द्र सरकार के पास भेज दिया गया। बद्रीगाय का नाम भागीरथी के तट पर स्थित प्रसिद्ध उत्तराखंड के बद्रीनाथ धाम से लिया गया है। गाय से प्राप्त होने वाले पंचगव्य (मूत्र, घी, दूध, दही, और गोबर के पांच अवयवों में से एक है) गोमूत्र का उपयोग स्वास्थ्य और कृषि दोनों क्षेत्रों में होता है, जो इसे एक बहुपयोगी प्राकृतिक उत्पाद बनाता है। उत्तराखंड के पहाड़ों में वर्षों पुरानी अनेक परंपराएं आज भी देखने को मिलती हैं, जिसमें से एक परंपरा गोमूत्र छिड़कने की भी होती है। पहाड़ों में गोमूत्र को लोग आज भी शुभ और अशुभ कार्यों में प्रयोग करते हैं। गांव क्षेत्र में जब महिलाओं के मासिक धर्म शुरु होते हैं तो उस वक्त घर में गोमूत्र छिड़का जाता है, साथ ही जो लोग भी (बच्चे या बड़े) महिला के आसपास या फिर उसके कमरे में जाते हैं तब गोमूत्र छिड़का जाता है। इसके अलावा देवी–देवताओं से जुड़ी एक परंपरा और जब किसी घर में बच्चा जन्म लेता है, तब गोमूत्र से शुद्धिकरण किया जाता है। जो भी गाय जंगलों में जाकर घास और वनस्पतियां खाती हैं, उनका गोमूत्र अत्यंत शुद्ध माना गया है। पर्वतीय क्षेत्र के लगभग हर घर में इसका अनिवार्य रूप से प्रयोग किया जाता है। यह परंपरा पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रही है और भविष्य में भी चलती रहेगी। भारतीय संस्कृति के हिंदू धर्म में गाय के भीतर 33 कोटि देवी देवताओं का निवास स्थान बताया गया है तथा गायों की पूजा भी भारतीय संस्कृति और धार्मिक अनुष्ठानों में आत्मीयता के साथ निहित है।

हिंदू धर्म में गायों को पवित्र माना जाता है और उनके प्रति अत्यंत श्रद्धा और सम्मान का भाव रखा जाता है। गाय पोषणकर्त्ता,

निस्वार्थ प्रदाता, पृथ्वी का प्रतीक और हमें सदैव ही देने वाली होती है। हिंदू धर्म में गाय का अत्यधिक महत्व है। राष्ट्र की समृद्धि और पर्यावरण की शुद्धि गोमाता की सेवा करके ही संभव है। भारतीय संस्कृति में गाय केवल एक पशु नहीं अपितु साक्षात देवी का स्वरूप है। गाय बहुत ही सीधी–सादी एवं दयालु होती है और यह मात्र प्रेम का प्रतीक है।

हिंदू धर्म के कुछ अन्य परंपराओं में इसे पवित्र माना जाता है और पूजा व शुद्धिकरण अनुष्ठानों में इसका उपयोग किया जाता है। आयुर्वेद के अनुसार देसी गाय का गोमूत्र एक संजीवनी है जो अमृत के समान है एवं दीर्घ जीवन प्रदान करता है, पुनर्जीवन देता है तथा रोगों को दूर रखता है। **गोवंश आधारित उपचार को पंचगव्य चिकित्सा कहा जाता है।** गोमूत्र में लगभग 24 प्रकार के लवण होते हैं। इससे बनी आयुर्वेदिक औषधियां कई रोगों के उपचार में उपयोगी हैं। यह एक्जिमा, सनबर्न, खुजली, सोरायसिस, मुहांसे आदि सभी प्रकार के त्वचा रोगों में लाभकारी है। यह पेट संबंधी रोगों, गुर्दे की बीमारियों, वात रोग, पेट की जलोदर और तपेदिक में भी लाभकारी प्रभाव डालता है। इसमें प्रबल रोगाणुरोधी और रोगाणुनाशक गुण होते हैं। गोमूत्र का सेवन कोलेस्ट्रॉल कम करता है, याददाश्त बढ़ाता है और बुढ़ापे की प्रक्रिया को धीमा करता है। यह लीवर के कार्य को सुधार करके मस्तिष्क और हृदय को शक्ति प्रदान करता है तथा शरीर से विषाक्त अवशेषों को निकालने में मदद करता है। कोई भी स्वस्थ व्यक्ति गोमूत्र का सेवन कर सकता है। इससे स्वास्थ्य में सुधार होता है और शरीर को रोगों से सुरक्षा मिलती है।

आयुर्वेद के अनुसार गोमूत्र कुष्ठ रोग, बुखार, पेप्टिक अल्सर, यकृत रोग, किडनी विकार, अस्थमा, कुछ एलर्जी, सोरायसिस, एनीमिया और यहां तक की कैंसर का इलाज कर सकता है। आधुनिक शोध के अनुसार भी वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध किया है कि गोमूत्र में कैंसररोधी गुण होते हैं। यह कैंसर के खतरे को रोकने का काम करता है। हजारों वर्ष पहले लिखे गए आयुर्वेद में गोमूत्र को अमृत सदृश माना गया है। हिंदुओं की प्राचीन परंपरा के अनुसार गोमूत्र एक पवित्र एवं उपयोगी द्रव्य है। गोमूत्र को अब फिनायल की जगह प्रयोग करने पर भी जोड़ा जा रहा है।

धार्मिक कारकों के अलावा वैज्ञानिक कर्म के अनुसार भी गायों का विशेष महत्व है। हिंदू धर्म के अनुसार इस पवित्र प्राणी का मूत्र तथा गोबर सर्वोत्तम खाद है और पोषक तत्वों से भरपूर होता है। इसमें नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटेशियम और कई सूक्ष्म पोषक तत्व होते हैं। इसके साथ ही इसमें कीट और रोग नियंत्रण की क्षमता भी होती है जो फसलों को रोगों से बचाता है। यह प्राकृतिक कीटनाशक और फफूंदनाशक का काम करता है। यह मिट्टी में लाभकारी सूक्ष्म जीवों की संख्या बढ़ाता है जिससे खराब भूमि भी उपजाऊ बनती है। रासायनिक खादों की तुलना में यह बहुत सस्ता और प्रभावी है, जिससे किसानों का खर्च कम होता है। गाय के मूत्र से जीवामृत जैसी खाद बनाई जाती है, जो फसलों को पोषण देती है।

जीवामृत बनाने की विधि– सामग्री– 10 किलो गाय का गोबर, 8 से 10 लीटर गोमूत्र, 2 किलो गुड़, 2 किलो दाल का आटा (बेसन), 200 लीटर पानी और खेत की मेढ़ की थोड़ी मिट्टी।

बनाने का तरीका – सभी सामग्री को एक ड्रम में मिलाकर अच्छी तरह घोलकर और 3 से 7 दिनों तक छायादार जगह पर रखें। दिन में दो बार लकड़ी से हिलायें। 15 दिन बाद यह प्रयोग के लिए तैयार है। इसका उपयोग ड्रिप सिंचाई के माध्यम से या सीधे फसल पर छिड़काव करके उपयोग किया जा सकता है, जिससे मिट्टी और फसल दोनों में सुधार आता है।

डॉ. राघवेंद्र शुक्ल

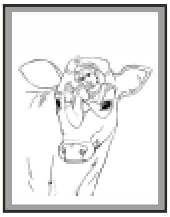

धैर्य की शक्ति

धैर्य में अद्भुत शक्ति है। अनेक संकटों का समाधान धैर्य में निहित है। जिन प्रश्नों का उत्तर विद्वान भी नहीं दे सके, उनका हल सदैव धैर्य ने किया है। ऋषि–मुनियों ने धैर्य को भगवान तक पहुंचने का मार्ग बताया है। वास्तव में सभी उपायों में धैर्य सर्वोत्तम है। **संत पथिक जी महाराज** का कहना था कि विश्व में जो भी झंझावात हैं, उनका समाधान धैर्य द्वारा सफलतापूर्वक किया जा सकता है, इसमें कोई संदेह नहीं।

सद्गुणों में धैर्य का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। कठिन–से–कठिन परीक्षाओं को धैर्य के माध्यम से पार किया जा सकता है। यह एक सिद्ध प्रयोग है। महात्माओं ने धैर्य के चमत्कारी प्रभावों का उल्लेख किया है। ज्ञानार्जन से लेकर जीविकोपार्जन तक धैर्य की परंपरा अद्भुत और उपयोगी है। यह सबसे सरल साधना के रूप में भी प्रतिष्ठित है। विद्यार्थी, व्यवसायी और राजनेता सभी ने धैर्य से लाभ उठाया है। कभी–कभी धैर्य के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं बचता। **विद्वानों ने समय को धैर्य से जोड़कर विशिष्ट प्रयोजन उद्घाटित किए हैं। लक्ष्य प्राप्ति के लिए समय का सम्मान आवश्यक है। समय का समादर ही धैर्य कहलाता है और काल की उचित प्रतीक्षा भी इसे परिभाषित करती है।** इतिहास साक्षी है कि बड़े– बड़े महारथी और सम्राट भी समय के अधीन अपनी रणनीतियों को सफलतापूर्वक लागू कर सके। धैर्य धारण करने के बाद ही उनके समक्ष अवसर आए। विपरीत समय ने कभी उनका साथ नहीं दिया। केवल अनुकूल समय ने ही उन्हें विजय दिलाई, जो धैर्य के माध्यम से संभव हुआ।

इस प्रकार धैर्य केवल एक गुण नहीं, बल्कि जीवन की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। यह हमें कठिनाइयों का सामना करने की शक्ति प्रदान करता है और हमें सही समय पर सही निर्णय लेने में मदद करता है। धैर्य का अभ्यास करने से हम न केवल अपने व्यक्तिगत जीवन में, बल्कि समाज में भी सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं।

जवाहर लाल कौल (वरिष्ठ पत्रकार)

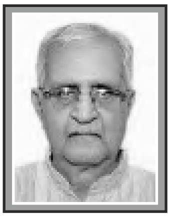

आत्मनिर्भरता का मंत्र है गोवंश आधारित कृषि

गाय के बारे में एक प्राचीन कथा है, जो गाय और धरती के बीच शाश्वत सम्बंधों को स्थापित करती है और भारतीय संस्कृति में गाय को मां के पद पर आसीन करती है। कथा राजा पुरु के बारे में है। पुरु को आदिराजा भी कहते हैं, क्योंकि उन्होंने ही पहली बार राजशासन और प्रजा संरक्षण के नियम बनाए। आर्थिक प्रगति की धारणा भी उनके शासन की मुख्य्य विशेषता थी ।

राजा को किसी युद्ध में जाना पड़ा। युद्धस्थल उन के राज्य से काफी दूर था, युद्ध जीतने में भी बहुत समय लगा। इस बीच चारों और सूखा पड़ने लगा और अकाल के कारण लोग और पशु भूख से मरने लगे। राजा जब वापस लौटा तो चारों ओर वनस्पति सूख चुकी थी, अन्नाभाव के कारण लोग अपने–अपने गांव छोड़ कर अन्यत्र चले गए थे। किसी ग्राम में राजा के सैनिकों के लिए भी भोजन की व्यवस्था नहीं हुई। किसी भी ग्राम में खाने के लिए कुछ भी बचा नहीं था। राजा ने सोचा कि शायद जंगल में कुछ फल, फूल या झाड़ियां मिल जाएं, जिनसे पेट भरा जा सके। लेकिन जब जंगल में प्रवेश किया तो यह देख कर निराशा हुई कि सभी पेड़ निर्पण हो चुके थे। नंगे पेड़ों में फल–फूल कहां से आते। नीचे घास भी पीली पड़ कर सूख गई थी। राजा की समझ में नहीं आ रहा था कि अपने सैनिकों के प्राण कैसे बचाएं? सैनिक न केवल थक गए थे अपितु भूख के कारण इतने निर्बल भी हो गए थे कि उन से चला भी नहीं जा रहा था। तभी राजा की नजर एक गाय पर पड़ी। वे जानते थे गाय को मारना पाप है और सामान्य अवस्था में वे ऐसा पाप कभी नहीं करते। लेकिन आज समस्या कई सैनिकों की प्राण–रक्षा की थी। राजा होने के नाते उनका यह दायित्त्व था कि अपने सैनिकों की रक्षा अपने प्राण दे कर भी करें। उन्होंने सोचा की गोहत्या का पाप लेने और उसके लिए नरक भोगने का जोखिम लेकर भी उन्हें सैनिकों की प्राणरक्षा को ही प्राथमिकता देनी होगी। राजा ने अपना घोड़ा गाय की ओर दौड़ाया। गाय पहले तो वहां से भाग गई। लेकिन जब घोड़ा निकट आया और राजा ने अपने धनुष पर बाण चढ़ाया तो गाय रुकी और वापस मुड़कर राजा से बोली, 'राजा तुम मुझे क्यों मारना चाहते हो, मैंने क्या अपराध किया है?

"मैं जानता हूं कि तुम निर्दोष हो और गाय को मारना महापाप है। लेकिन मैं विवश हूं, राजा हूं और मेरे लिए अपने इन भूखे सैनिकों को बचाने का दयित्त्व है। तुम्हारे सिवा इस वन में खाने के लिए और कुछ भी नहीं है, इसलिए मुझे यह पाप करना पड़ रहा है। लेकिन राजा मेरा शरीर कब तक चलेगा, कल फिर भोजन की आवश्यकता पड़ेगी तब क्या करोगे? यह अकाल एक दो–दिन में तो नहीं जायेगा। केवल एक दिन का कर्तव्य निभाने के लिए ही तुम पाप के भागी बनना चाहते हो?" 'तो मैं क्या करूं मेरी समझ में नहीं आता।' लेकिन उसी क्षण राजा को आभास हुआ कि वे किसी असाधारण जीव के साथ बात कर रहे हैं, गाय कैसे बोलती है और वह भी इतनी विवेकपूर्ण बातें। राजा घोड़े से उतरे और हाथ जोड़ कर बोले, 'देवी तुम साधारण गाय नहीं हो, कृपा कर के मुझे बताओ कि तुम हो कौन?'

गाय ने कहा, "मैं वही धरती हूं जिस पर तुम खड़े हो, यह कामधेनु का रूप मैंने तुम्हारे लिए ही धारण किया है। मैं तुम्हारे सैनिकों के लिए

दूध दे सकती हूं जो कल और उसके पश्चात भी मिलेगा। लेकिन अगर तुम मेरे इस तन को आज ही खाना चाहते हो तो कल तुम्हारी मृत्यु निश्चित है। इस धरती और मुझमें विलक्षण समानता है। इस धरती को सींचोगे, समय रहते बोओगे, सूखे की संभावना में जल का संचय करोगे और प्यार से धरती को पालोगे तो यह भी तुम्हारे, तुम्हारे परिवार और तुम्हारी प्रजा के लिए भरपूर अन्न, फल–फूल, ईंधन, घर के लिए काष्ट और स्वस्थ रहने के लिए औषधि प्रदान करती रहेगी। राजा मुझे गाय के रूप में भी और धरती के रूप में भी पालो, अपनाओ, यही तुम्हारा कर्तव्य है।" राजा को बात समझ में आ गई और तभी से इस धरती को पृथ्वी कहा जाने लगा –पृथू की बेटी।

मानव सभ्यताएं नदी–घाटियों में ही विकसित हुई हैं। विश्व की सबसे बड़ी और उपजाऊ नदी घाटी गंगा–यमुना घाटी ही थी, जहां अनादि काल में भारतीय रहते थे, जहां उन्होंने नए संस्कार प्राप्त किए और एक विराट संस्कृति को जन्म दिया, जहां के विशाल मैदानों में उन्होंने कृषि का विकास किया, जहां उन्होंने विपुल साहित्य रचा। यही उनकी कर्म भूमि थी, जो लगातार फैलती गई और आसेतु हिमालय तक एक विशाल देश को आकार मिला। स्वाभाविक था कि जीवन–यापन का आरम्भिक आधार कृषि ही रहा होगा और उसमें गोवंश को प्राथमिकता मिली होगी। प्राचीन भारतीयों को संस्कार प्रकृति से ही मिले थे, जिसमें गोवंश प्रमुख तत्व था। जैसा पुरु की कथा से स्पष्ट है। भारतीय ऋषियों ने इस तथ्य को महसूस किया था कि प्रकृति सार्वभौमिक प्रक्रिया है और सभी जीव–जंतु प्रकृति के ही अंग हैं– स्वयं ही प्रकृति हैं। यह अहसास भी हुआ था कि जिस प्रकृति के हम अंग हैं उसका स्वामी बन कर, उसे एक बाहरी व्यक्ति की तरह शासित नहीं किया जा सकता है। प्रकृति के साथ सहयोग कर के ही जिया जा सकता है, उसे गुलाम बना कर नहीं। गाय और धरती के बीच समानता के ही कारण धरती को भी गाय का ही स्वरूप मान लिया गया। प्रकृति के **शोषण** की कल्पना ही भारत में नहीं हुई है। दरअसल विकास के मामले में शोषण शब्द का हमारे यहां उपयोग ही नहीं होता। हम केवल एक शब्द को जानते हैं– **दोहन।** दूध दोहना, जिसमें केवल उतना ही प्राप्त करने का प्रयास होता है जितना गाय आसानी से दे सके और उसकी संतति के लिए भी पर्याप्त बचा रहे। यही नियम प्रकृति के लिए भी अपनाया गया, हम उतना ही लेते हैं जितना अतिरिक्त हो और धरती या प्रकृति खाली न हो जाए। शोषण और दोहन में मौलिक अंतर है, क्योंकि शोषण चूसने को कहते हैं, गन्ने को चूस लिया और रसहीन बनाकर कचरे के रूप में फैंक दिया। यही आधुनिक विकास का माडल है, जिसके कारण अनेक प्रकार की समस्याएं पैदा होती हैं। गाय, धरती और प्रकृति को दोहा जा सकता है, उसका शोषण उसके विनाश का कारण बन जाता है, जैसे गाय को दोहने के बदले उसे

खा जाना। प्राचीन समय में गाय दूध देती थी और बैल हल चलाता था, इसलिए हमारी कृषि कर्म का आधार यही था। प्रश्न उठता है कि क्या बदले हुए हालात में भी हम गाय को महत्व इसलिए ही दें कि कभी गोवंश से ही खेती संभव हो जाती थी, जबकि आज हम काफी हद तक मशीनों का उपयोग करते हैं। गोवंश कई और अर्थों में भी हमारे ग्राम–जीवन को पुष्ट करता है। जिस गोबर को हम केवल जलाने वाला ईंधन ही मान लेते हैं वह उत्तम प्रकार की खाद है, यह तो अब सिद्ध हो गया है। कथित आधुनिकता के जुनून में हम ने खेतों को दशकों से रासायनिक उर्वरकों से भर दिया है, जिससे कि उस की उत्पादकता तो कम हो ही रही है उससे प्राप्त अन्न भी धीरे–धीरे विशाक्त होने लगा है। पंजाब में कथित कृषि क्रांति के बाद से अब यह महसूस होने लगा है कि धरती बांझ बनती जा रही है। पंजाब में कहा जाने लगा है कि हमने अपनी मां (धरती) को नशेड़ी (अमली) बना डाला है। यही स्थिति कमोबेश और राज्यों की है।

धरती को फिर से अपनी ऊर्जा लौटाने के लिए हमें जैविक खाद का प्रयोग करना होगा। गोबर से अच्छी जैविक खाद कोई नहीं है। गोमूत्र के औषधीय गुण पर भी अब काफी शोध हो चुका है और कृषि में इसकी उपयोगिता निर्विवाद है। लेकिन गाय हमारी सभ्यता और हमारी संस्कृति की सहचरी रही है, इसी के साथ हम वह बने हैं जो आज हैं। इसीलिए हमारे साहित्य में, हमारे ऐतिहासिक नायकों के जीवन चरित में गाय सर्वत्र विद्यमान है। हजारों सालों के हमारे विकास में जिसने हमारा साथ दिया वही हमारे भविष्य का भी आधार हो, यही हमारी संस्कृति की मांग है।

kauljawaharlal@gmail.com

Dr. Sanjay Raman "Vidyavachaspati"

MATTU PONGAL
A TRIBUTE TO TAMIL NADU'S CATTLE

In the vibrant landscape of Tamil Nadu's cultural heritage, few festivals resonate with as much gratitude and earthly connection as Mattu Pongal. Falling on the third day of the four-day Pongal season, this day is dedicated entirely to cattle, the silent, sturdy backbone of India's agrarian economy. While the previous days honor the Sun God and the joys of the household, Mattu Pongal turns the spotlight toward the cow and the bull, elevating them from mere livestock to revered members of the family.

The spiritual significance of this day is beautifully captured in a popular legend involving Lord Shiva and His mount, Nandi. Seeking guidance on how to lead their lives, a delegation of humans once approached Shiva, who sent Nandi with a simple instruction: "Eat once and bathe thrice daily." However, as Nandi traveled, he muddled the message, telling the people instead to "Bathe once and eat thrice daily." As humans adopted this lifestyle, a severe food shortage soon arose. Upon realizing Nandi's blunder, Shiva admonished him, declaring that since he was responsible for the increased demand for food, he must go to Earth to help humans grow it. Thus, Nandi was cursed to labor in the fields and from that time on the bull has played an eternal role in agriculture. This story serves as a profound reminder that the cattle's toil is a divine service, making the golden harvests of Tamil Nadu possible.

Mattu Pongal is a sensory explosion of color and devotion. The day begins with a ritualistic cleaning that transforms the

farmyard. The cattle are taken to nearby rivers or ponds, washed thoroughly and brought back to be decorated. Their horns are polished and painted in brilliant hues of vermilion, yellow and blue. Often, metal caps or colorful pom-poms are fixed to the tips. A mixture of turmeric and kumkum is applied to their foreheads, marking them as sacred, while bells, beads and flower garlands are draped around their necks. The most significant moment is the offering of Sakkarai Pongal (Sweet Rice). Before the human family eats, a portion of the freshly harvested rice, boiled with jaggery and milk, is fed to the cattle. This act symbolizes a direct sharing of the fruits of labor, acknowledging that the harvest belongs to the animals as much as the farmers.

Beyond the quiet rituals of the home, Mattu Pongal is the season of Jallikattu, the traditional bull-embracing sport. While it is a display of bravery, its cultural heart lies in the preservation of indigenous cattle breeds like the Kangayam and Pulikulam. The sport is most famously organized in the Madurai District, which serves as the global epicenter for the event. The world-renowned venues of Alanganallur, Palamedu, and Avaniyapuram attract thousands of spectators. Other districts like Pudukkottai, Tiruchirappalli and Sivagangai also host massive events, ensuring the tradition remains a cornerstone of rural Tamil identity.

The social significance of Mattu Pongal extends deeply into the community fabric, particularly for the women of the household. They spend the weeks leading up to the festival preparing the home, creating intricate Kolams (rice flour patterns) that often feature images of cattle and plows. In many villages, the "Kanum Pongal" festivities begin shortly after the cattle rituals, where families travel to visit relatives, strengthening social bonds that have existed for generations. It is a time when the hierarchy of master and beast is dissolved, replaced by a profound sense of mutual respect and partnership.

In an era of rapid mechanization, the significance of the cow on Mattu Pongal serves as a vital reminder of sustainability. Cattle provide manure, the most effective organic fertilizer for the region and for small-scale farmers, a cow is a living bank account providing both milk and income. Furthermore, as the world grapples with climate change, Mattu Pongal stands as a beacon of regenerative living, highlighting a lifestyle where nothing is wasted and every creature has a purpose.

Ultimately, Mattu Pongal is more than a religious observance; it is a profound lesson in ecological humility. In a world increasingly detached from the sources of its food, this festival pauses time to express gratitude by saying "Thank you" to the creatures that make life possible. By bowing to the cow, the people of Tamil Nadu celebrate the interconnectedness of all living things, proving that progress need not come at the cost of forgetting our oldest companions.

Dr. Aastha Pathak

GOMATA
LIVING EMBODIMENT OF HARMONY

Gomata, the cow, has held a central and sacred place in the cultural, spiritual, and social life of India since time immemorial. Revered not merely as an animal but as a benevolent presence, Gomata symbolizes nourishment, compassion, and selfless giving. From ancient Vedic times to the present day, Indian civilization has viewed the cow as a living embodiment of harmony between humans and nature. This reverence did not arise out of sentiment alone but out of lived experience, as the cow played an indispensable role in sustaining agrarian life, promoting ethical values, and shaping spiritual thought. In a land where survival depended heavily on agriculture and livestock, the cow emerged as a silent supporter of human existence, giving much while asking for little in return.

Ancient Indian scriptures and texts repeatedly highlight the importance of Gomata. The Vedas refer to the cow as Aghnya, meaning one who should not be killed, emphasizing the principle of non-violence. In the Puranas and epics, the cow is associated with abundance, motherhood, and divine grace. Kamadhenu, the celestial cow, is described as the fulfiller of wishes, symbolizing nature's ability to provide endlessly when treated with respect. This spiritual symbolism reinforced ethical conduct in society, teaching people to protect the weak, respect life, and practice gratitude. The cow thus became a moral teacher as much as a provider of material sustenance.

From a practical perspective, Gomata has been the backbone of rural economy for centuries. Milk and milk products such as curd, butter, and ghee form an essential part of the

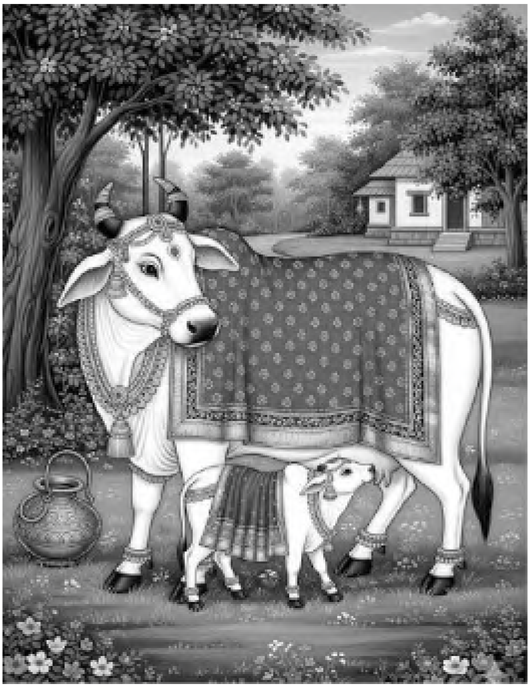

Indian diet, contributing to nutrition and health. Bullocks were traditionally used for ploughing fields, drawing water, and transporting goods, making agriculture possible even with limited resources. Cow dung served as natural manure, improving soil fertility, while also being used as fuel and for coating floors to maintain hygiene. In this way, every aspect of the cow's existence was integrated into daily life, reflecting a sustainable lifestyle that modern society is now striving to rediscover.

Beyond economic utility, Gomata holds deep spiritual significance in daily rituals and practices. Cow products have traditionally been used in religious ceremonies, symbolizing purity and sanctity. Panchagavya,

a mixture of five cow-derived products, has been valued in traditional medicine and agriculture. Such practices highlight the holistic worldview of ancient Indian society, where spirituality, science, and ecology were interconnected. The cow was not exploited but cared for with a sense of responsibility, acknowledging that human well-being was inseparable from the well-being of other living beings.

Gomata also represents the spirit of motherhood. Just as a mother nurtures her children selflessly, the cow provides nourishment throughout her life. This maternal symbolism resonates deeply in Indian culture, where respect for motherhood is a core value. By honoring the cow, society reinforced respect for all mothers and for the nurturing forces of nature. This outlook cultivated compassion, patience, and humility—qualities essential for social harmony. Goseva, or service to cows, came to be seen as a form of service to society and humanity at large.

In the modern era, however, the traditional bond between humans and Gomata faces serious challenges. Rapid urbanization, mechanization of agriculture, and commercialization of dairy practices have altered age-old relationships. Many cows are neglected once they cease to be economically productive, raising ethical concerns. At the same time, loss of indigenous cattle breeds threatens biodiversity and long-term agricultural sustainability. These issues call for renewed awareness and responsible action, not merely driven by sentiment but guided by ethics, science, and compassion.

Protecting Gomata today does not mean resisting progress; rather, it means redefining progress to include kindness, sustainability, and respect for life. Ethical animal husbandry, promotion of indigenous breeds, support for gaushalas, and adoption of organic farming practices can help restore balance. Education plays a vital role in this process, enabling younger generations to understand the cultural, ecological, and economic value of the cow beyond stereotypes or superficial narratives. When awareness replaces ignorance, reverence naturally transforms into responsible care.

Gomata's relevance extends far beyond religion or tradition. In a world facing environmental degradation, climate change, and ethical crises, the values associated with Gomata offer important lessons. Sustainable living, minimal exploitation of resources, and coexistence with nature are principles deeply embedded in the traditional Indian approach to cow protection. By learning from these principles, modern society can move towards a more balanced and humane future.

In essence, Gomata is not just a symbol of the past but a guide for the future. She reminds humanity of the importance of gratitude, restraint, and compassion. Preserving the dignity and well-being of Gomata is not merely an act of cultural preservation but a commitment to a way of life that respects all forms of existence. As India moves forward in a rapidly changing world, holding on to the timeless values represented by Gomata can help ensure that progress remains rooted in humanity, ethics, and harmony with nature.

हार्दिक निवेदन

सभी गोभक्त–गोप्रेमी बंधुओं से करबद्ध अनुरोध है कि वे इस पत्रिका का सदस्य अवश्य बनें और अन्य गोभक्तों को भी सदस्य बनायें। कृपया सभी लोग अपना वार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क निम्नलिखित बैंक व खाता नंबर में जमा कराएं –

पंजाब नेशनल बैंक, बसंत लोक, नई दिल्ली

खाता नम्बर – 04072010038910   IFSC CODE : PUNB0040710

नोट – शुल्क "भारतीय गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद" के नाम पर जमा करें। सम्पर्क सूत्र : 011.26174732

pnb punjab national bank

...the name you can BANK upon!

अब आप यूपीआई के माध्यम से भी पत्रिका का शुल्क जमा कर सकते हैं

SCAN & PAY USING ANY BHIM UPI APP

9958710672m@pnb

MERCHANT: BHARTIYA GOVANSH RAKSHAN SAMVARDHAN PARISHAD

BHIM | UPI

BHARAT INTERFACE FOR MONEY   UNIFIED PAYMENTS INTERFACE

विहिप, गोरक्षा विभाग-देवगिरी प्रांत की बैठकें संपन्न

विश्व हिन्दू परिषद, गोरक्षा विभाग देवगिरी प्रांत की बैठक गत माह संपन्न हुई। बैठक में जिला टोली एवं प्रखंड टोली के सदस्यों की नियुक्ति की घोषणा की गई। जलगांव और भुसावल में संपन्न हुई बैठकों में केंद्रीय सहगोरक्षा प्रमुख केशव राजु जी उपस्थित रहे। पंचगव्य प्रशिक्षण, घरेलू उत्पाद, किसान प्रशिक्षण, संपर्क अभियान और गोवंश अधारित कृषि से किसान की आय कैसे बढ़े, इस संदर्भ में विचार–विमर्श किया गया।

किसान प्रशिक्षण सम्मेल्लन जलगांव गोशाला में संपन्न हुआ, जिसमें कृषि प्रशिक्षण प्रमुख शिवप्रसादजी ने मार्गदर्शन किया। इस अवसर पर कार्यकर्ताओं की संख्या 160 थी। जालना शहर की दोनों गोशालाओं के ट्रस्टिओं के साथ वार्ता हुई। इसी दौरान संभाजी नगर शहर और ग्रामीण कार्यकर्ताओं की बैठक भी संपन्न हुयी, जिसमें 65 कार्यकर्ता उपस्थित थे। सिल्लोड प्रखंड में कृषि मेला संपन्न हुआ, जिसमें काफी संख्या में किसान और महिलाएं उपस्थित थीं। सभी बैठकों–सम्मेलनों में केशव राजू जी का मार्गदर्शन सभी को मिला। इन कार्यक्रमों में सभी कार्यकर्ताओं ने अथक परिश्रम किया।

विश्व हिन्दू परिषद, देवगिरी प्रांत टोली

प्रांत गोरक्षक प्रमुख	– राजेश जैन
प्रांत गोरक्षक सहप्रमुख	– बद्रीनारायण सारडा
जलगांव विभाग प्रमुख	– ॲड. हेमंत गुरव
बजरंग दल प्रांत गोरक्षक प्रमुख	– राहुल वर्तले
जलगांव जिला गोरक्षा प्रमुख	– सचिन चौधरी
भुसावल जिला गोरक्षक प्रमुख	– देवेश माली
जालना जिला गोरक्षक प्रमुख	– व्यंकटेश भगत
संभाजीनगर गोरक्षक प्रमुख	– गणेश शेलके व नारायण उताडे

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6"
Email : gosampada@gmail.com
website : www.vhp.org

Registered No. DL-SW-01/4027/24-26
RNI No. 69508/98 प्रस्तुति : 13–14
प्रकाशन तिथि : 11 फरवरी, 2026

गौ-सम्मान आह्वान अभियान

गौ-सम्मान आह्वान अभियान की जागरूकता के लिए शर्ट, टी-शर्ट, कोट, सलवार-सूट, साड़ी आदि पर सेफ्टी पिन से टाँकने हेतु साटन कपड़े के बैच नवल डागा जी, जयपुर द्वारा बनाये गये हैं, जिन्हें सभी कार्यकर्ता, गोभक्त-गोप्रमी उनसे प्राप्त कर सकते हैं।

संपर्क सूत्र : 9460142430

प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र प्रसाद सिंहल ने रायल प्रेस,
बी 81, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली से मुद्रित कर भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद् (विहिप)
संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-22 के लिए प्रकाशित की। संपादक - देवेन्द्र नायक